अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट महिला-आंदोलन की नेता

# क्लारा जेट्किन

संघर्षरत महिला प्रकाशन

(फिलिप.एस.फोनर के लेख पर आधारित
'प्रशाता' के इस लेख का तेलुगु से अनुवादः आर. शांता शुंदरी

संघर्षरत महिला प्रकाशन

# अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट महिला-आंदोलन की नेता क्लारा जेट्किन

20वीं सदी के आरंभ में यूरोप के बहुत बड़े नारी-आंदोलन की नेत्री, लगभग 25साल तक यूरोप की सबसे महत्वपूर्ण स्त्री-पत्रिका की संपादक, मजदूर औरतों को मजदूर संघों (ट्रेड यूनियनों) में संगठित करने वाली ट्रेड यूनियन कार्यकर्ता, महिलाओं को वोट का हक और समान हक दिलाने के लिए लड़ते हुए "अंतराष्ट्रीय महिला दिवस" को दुनिया की सभी महिलाओं को प्रदान करने वाली अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी महिलाओं की सचिव,

तीसरे इंटर्नेशनल की प्रमुख नेता
अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट महिलाओं की सचिव
युद्ध-प्रियता और साम्राज्यवादी युद्धों के विरूद्ध
अंतिम सांस तक लड़ने वाली महिला सैनिक
महिला मुक्ति के बारे में
एक वैज्ञानिक सिद्धांत की रचना करने वाली सिद्धांतकार
उत्पीड़ित लोगों से प्यार करने वाली
उनकी दोस्त,
संशोधनवाद की जानी दुश्मन
पितृसत्ता का उन्मूलन करने के लिए
दिन-रात लड़ने वाली योद्धा
और भी बहुत कुछ....
पर एक शब्द में कहना हो तो वह है

**क्लारा जेट्किन!**

यह क्लारा कौन है? आइए, 'अपने रोम-रोम में समाजवाद भरकर जीने वाली क्लारा के बारे में जानेंगे। पर यह जानना इसलिए जरूरी नहीं कि आप इतिहस में रूचि रखने वाले विद्यार्थी बन जाएं, या सिर्फ क्लारा की प्रशंसा करने के लिए भी नहीं।

हम भी क्लारा की तरह उत्पीड़ित लोगों के लिए लड़े इसलिए उनके बारे में जानना जरूरी है।

क्लारा के बारे में जानें, ताकि वर्गों और शोषण रहित समाज के निर्माण के लिए अपना सब कुछ अर्पित कर सकें।

क्लारा ऐसनर जेट्किन 5 जुलाई 1857 को जर्मनी के विडेरो नामक गांव में पैदा हुई। क्लारा की मां का नाम था जोसफीन विटाल ऐसनर। ये काफी पढ़ी लिखी थीं। फ्रांन्सीसी क्रान्ति से उत्पन्न स्वेच्छा, समानता, भाईचारा आदि को बहुत मानती थीं। ये आम सभाओं में स्त्रियों की संपूर्ण आर्थिक स्वेच्छा के बारे में भाषण देती थीं। ,बहस करती थीं। 1860 दशक के अंतिम दौर में महिलाओं को शिक्षा दिलाने के लिए इन्होंने एक संगठन का निर्माण किया। इसमें शाम के वक्त औरतों को हस्त कलाएं, विभिन्न भाषाएं, दफ्तर में काम आनेवाली जरूरी शिक्षा आदि सिखाई जाती थीं। क्लारा के पिता, जोसफीन का उदारवादी रजनीतिक विचारों का विरोध करते थे। वे एक रूढ़ीवादी प्रोटेस्टेंट थे। जब उनकी पत्नी धार्मिक व्यवस्थाओं की आलोचना करती थी तो वे चकित रह जाते थे। राजनीतिक विचारों और धर्म के प्रति खुद का जहां तक संबंध है, क्लारा पर माँ का ही प्रभाव पूरी तरह रहा है। क्लारा के मन में महिलाओं के अधिकार के लिए लड़ने के प्रति अभिरुचि जोसफीन ने ही जगाया था। क्लारा के पिता गरीब थे पर खूब पढ़-लिखकर वे अध्यापक प्राप्त कर लिया तो वे अपने बच्चों की पढ़ाई की खातिर लीपजिग नामक स्थान में जा बसे। वहां उन्हें भयानक गरीबी में जीवन बिताना पड़ा। क्योंकि क्लारा के पिता के पेन्शन के पैसों के सहारे उन्हें गुजारा करना पड़ा।

क्योंकि क्लारा औरत थी, वे कांलेज में पढ़ने नहीं जा सकी। पर क्लारा की अक्लमंदी को पहचानने वाले अगस्ट स्मिट ने उन्हें लीपजिग के वानस्टेबर इंस्टिच्यूट के टीचर ट्रेनिंग कांलेज में मुफ्त शिक्षा दिलवाया। पूरे जर्मनी में यह सबसे अच्छा कॉलेज था। उनकी बुद्धि के विकास के लिए यहां पर उन्होंने चार साल जो शिक्षा पाई थी (1874-78) वह बहुत काम आई। उन दिनों जर्मनी में महिलाओं को मिलने वाली अतिउत्तम शिक्षा उन्हें वहां मिली। वे अपने पिता की ग्रंथालय में साहित्य और इतिहास के ग्रंथों को घंटों बैठकर पढ़ती थीं। कॉलेज में उस ज्ञान को और गहराई से उन्होंने विकसित किया था। उन्हीं दिनों उन्होंने इतालवी, अंग्रेजी, फ्रांसीसी भाषाओं का अध्ययन करना भी शुरू कर दिया था। उनके क्रांतिकारी जीवन में उनका काफी योगदान रहा। वहां वह महिलाओं की समानता से संबंधित बहसों में डूबी रहती थीं। लीपजिग महिला संस्था से और जर्मन महिलाओं के राष्ट्रीय संघ से उन्होंने संबंध बनाए । अगस्ट स्मिट के घर अकसर जाया करती थीं। उनके साथ काम करने वाले लुई ओटा से भी उनकी वहां अक्सर मुलाकात होती थीं दिन पर दिन क्लारा की दिलचस्पी महिला अधिकारों के लिए आंदोलन की तरफ बढ़ती चली गई।

असल में स्मिट एक बुर्जुआ उदारवादी था। फिर भी उन्हीं के क्लासों में जाने

के बाद पहली बार क्लारा के मन में समाजवाद के प्रति दिलचस्मी जागी। वे सोशल-डेमोक्रेटों के अखबार और पुस्तिकाएं पढ़ती थीं। खासकर फेर्डिनांड लासाल की रचनाएं पढ़ीं। 1878 में पूरे क्लास में अव्वल नंबर लेकर पास हुई। डिस्टिंकशन भी मिला। उसके कुछ ही दिन बाद लीपजिग में रहने वाले कुछ प्रवासी रूसी छात्रों का परिचय प्राप्त किया। उनके द्वारा जर्मन सोशल डेमोक्रेटों का परिचय प्राप्त हुआ। अपने रूसी दोस्तों के साथ वे उनके सभा- समारोहों में विलियम लीबनेक्ट के भाषण सुनने जाया करती थीं। लीबनेक्ट और अगस्ट बेबेल ने 1869 में जर्मन सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी की स्थापना की थी।

क्लारा के उदारवादी गुरू, मां और बहन उनके इन नए दोस्तों के खिलाफ थे। पर क्लारा ने उनकी दोस्ती को नहीं छोड़ी। अगस्ट स्मिट से और अपने परिवार से नाता तोड़ दिया। उन्हें अब तक नए गुरू मिल गए। उनका नाम था ओसिप जेट्किन। वे एक प्रवासी थे और रूसी थे। वे अपने वक्त को क्रांतिकारी गुटों के साथ या लकड़ी का काम करने में बिताते थे। वे मार्क्सवाद के पूरे रूप से समर्थक थे। बहुत जल्द वे क्लारा को मार्क्स और एंगेल्स की किताबें देने लगे क्लारा को समाजवादी सिद्धांत समझाते थे। बहुत जल्द वह लीपजिग के मजदुर शिक्षक संगठन में जेट्किन के साथ जाकर भाषण सुनने लगी। जट्किन ने क्लारा को इस बात का प्रोत्साहन दिया कि क्रांति को चलाने के लिए छात्रों को नहीं, बल्कि मजदूर वर्ग को आगे रहना चाहिए।

1878 तक क्लारा ने समाजवाद की स्थापना के लिए अपने जीवन को समर्पित कर दिया था। महिला होने के नाते उन्हें जर्मन सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी में सदस्यता नहीं दी गई थी, फिर भी वे पार्टी के कामों में अपने जी जान से लग गई। 21 अकटूबर 1878 में समाजवाद विरोधी कानून को लागू कराने में बिस्मार्क सफल हो गया। फिर फौरन सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी को और उनकी प्रकाशन संस्था को गैर-कानूनी घोषित किया गया था। सभी नेताओं को अज्ञात-वास में जाना ही पड़ा। जर्मनी में ही ठहर जानेवाले अन्य सोशल डेमोक्रेटों की तरह क्लारा भी गैर कानूनी कामों में भाग लेने लगीं। निषिद्ध पार्टी के लिए और दिये हुए नेताओं के लिए वे चंदा वसूल करने लगी। ओसिप जेट्किन के साथ उनके संबंध बने रहे। उन्हीं दिनों वे लीपजिग के सिवानों में अध्यापन का काम करती थीं। 1880 तक वे यहीं काम करती रही। तब यह कहकर ओसिप जेट्किन को जर्मनी से बाहर निकाल दिया गया था कि वे गैर कानूनी राजनैतिक कार्य करने वाले विदेशी हैं। उनका साथ न छोड़ने का निश्चय करके क्लारा उनके साथ ऑस्ट्रिया गई। वहां एक अमीर फैक्टरी के मालिक के घर में अध्यापन का काम किया। वहां एक डेढ़ साल रहने के बाद जूरिच (स्विट्जरलैंड)

गई। उन्होंने सोचा कि वहां से पैरिस जाउंगी। ओसिप उस समय पैरिस में थे।

जूरिच में उन्होंने पांच महीने बिताए।उस दौरान वे समाजवादी आंदोलन के और नजदीक आई। वहां वे जर्मन सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के प्रमुख नेताओं से मिली।जूलिया मोट्लर के साथ मिलकर काम किया। 'डेर सोशल डेमोक्रेट'(निषिद्ध पार्टी की केंद्रीय पत्रिका)और अन्य पार्टी से संबंधित साहित्य को जर्मनी में चोरी छिपे पहुंचाने की जिम्मेदारी मुख्य रूप से उन पर थी।

1882 नवंबर में वे जूरिच से पैरिस गई। वहां ओसिप जेट्किन के साथ एक ही छत के नीचे जीने लगीं। उनके दो बेटे हुए (मैक्सिम और कॉन्स्टैंटिन)। फिर भी क्लारा ने जेट्किन से शादी नहीं की। क्योंकि उन दिनों के पितृसत्तात्मक विवाह के कानून के तहत,उनसे शादी करने पर जर्मन का उनका नागरिक अधिकार छूट जाता। लगभग 10 साल वे इसी तरह साथ रहे।

पैरिस में ये बड़ी गरीबी में दिन गुजारते रहे। क्योंकि प्रवासी सोशलिस्टों को नौकरी मिलना बहुत मुश्किल था। पैसे कमाने के लिए ये दोनों विभिन्न सोशलिस्ट पत्रिकाओं में लेख लिखते थे, अनुवाद करते थे। इसके अलावा क्लारा टयूशन पढ़ाती थीं (घर संभालना, बच्चों की देखभाल के काम अलग थे)। पर इस पैसों से उनको दो वक्त की रोटी मिल जाती थी, बस। पेट भर खाना और रहने के लिए अच्छा घर उन्हें कभी नहीं मिले। जून 1885 में किराया न दे सकने की वजह से मकान मालिक ने उन्हें बाहर निकाल दिया था। उनके बदन पर जो कपड़े थे, उन्हें छोड़कर उनके पास जो थोड़ा-बहुत सामान थाा वह भी छीन लिया गया था।

मार्क्स की बेटी, लारा लाफार्ग के साथ क्लारा जुलूसों में भाग लेती थीं इतनी तकलीफों और मुश्किलों के बावजूद ये दोनों राजनैतिक कार्यों में बड़ी फुर्ती से भाग लेती थीं। साहित्य का प्रचार करती थीं। क्लारा ने समाजवाद को फैलाने के लिए मजदूर औरतों को काम पर लगाना शुरू की थी।

पर बहुत ही कठोर परिस्थितियों के कारण क्लारा की सेहत खराब हो गई। खाने की कमी और ऊपर से अधिक काम करते रहने से उन्हें तपेदिक (टीबी) की बीमारी हो गई। उन्होंने बिस्तर पकड़ लिया। डॉक्टरों ने उन्हें आराम करने को कहा। क्लारा की बीमारी के बारे में जब खबर मिली तो उनकी मां ने उन्हें अपने पास बुलाया। क्लारा लीपजिग लौट गई और कुछ महीने अपने छोटे भाई के साथ रहीं। क्लारा के बेटों की जिम्मेदारी उनकी नानी ने ले ली।

क्लारा का इस तरह जर्मनी में लौट आना उनके लिए बहुत फायदेमंद साबित हुआ। उनके पुराने कॉमरडों ने उन्हें बुला भेजा। वे विलियम लीबनेक्ट से मिलीं।

लीपजिग में एक गोपनीय बैठक में विदेशों  में रहने वाले जर्मन सोशल डेमोक्रेटों के बारे में क्लारा ने पहली बार भाषण दिया। उनका भाषण इतना प्रभावशाली रहा कि अन्य गुटों ने भी उनका भाषण सुनने का आग्रह किया। वहां वे तीन महीने रहीं और उस दौरान हप्ते में दो-तीन बार वे इस तरह के गुप्त संगठनों में भाषण देती थीं। वे बड़े जोश के साथ अपने अनुभवों के बारे में, गुप्त पार्टी की कार्य-प्रणाली के बारे में लिखती थी। जेट्किन के भाषणों में अगस्ट बेबेल की लिखी, महिलायें-समाजवाद नामक किताब पर बहस रहा करती थी। उनमें लोग बड़ी तादाद में शरीक होते थे।

पैरिस लौटने के बाद क्लारा ने घर का सारा बोझ अपने ऊपर ले ली थी। ओसिप जेट्किन की रीढ़ की हड्डी में क्षय रोग हो गया था। वह धीरे धीरे फुलता गया। 1889 में उनकी मृत्यु हो जाने तक क्लारा ने उनकी बड़ी लगन से सेवा की। इस दु:खद घटना से उबरते वक्त, 14 जुलाई 1889 में पैरिस में आयोजित दूसरे अंतरराष्ट्रीय प्रारंभिक सम्मेलन को संगठित करने की कमेटी के संगठनकर्ता के रूप मे क्लारा को चुना गया। बैस्टिल जेल को तोड़े, 14 जुलाई को, सौ साल पूरे होते थे। "बेल्लिनेर वॉल्क्स ट्रिब्यून" नामक समाजवादी अखबार से जुड़ी औरतों ने उस सम्मेलन में उन्हें बर्लिन मजदूर महिलाओं की प्रतिनिधि के रूप में भी चुना था। उस सम्मेलन में भाग लेने के लिए 19 देशों से 400 प्रतिनिधि आए। उनमें से 8 महिलाएं थीं।

सम्मेलन के छठवें दिन क्लारा जेट्किन ने मजदूर महिलाओं के बारे में भाषण दिया। भारी उद्योग, यंत्रों द्वारा उत्पादन ने महिलाओं को आधुनिक औद्योगिक श्रमशक्ति का किस प्रकार हिस्सा बनाया, इस विषय पर वे विस्तार से बोलीं उन्होंने उन समाजवादियों की आलोचना की जो यह  कहते हैं कि उद्योगों में औरतों के आ जाने से वेतन घटने लगे है और काम का समय बढ़ने लगा है। ये समाजवादी इसी तर्क के आधार पर औरतों के उद्योगों में प्रवेश का विरोध करते थे। उन्होंने जोर देकर कहा, "इस तरह की प्रतिकूल परिस्थितियों की जननी पूंजीवादी व्यवस्था है। महिलाओं के श्रमशक्ति में भाग लेने से जो विनाशकारी नतीजे पैदा हुए हैं, वे सब पूंजीवादी व्यवस्था के साथ खत्म हो जाएंगे।" श्रम करने वाले परूष की तरह श्रम करने वाली महिला भी ज्यादा घंटे काम करती है और कम वेतन पाती है। उसकी मूलभूत आवश्यकताएं भी पुरुष के समान हैं। इसलिए समाजवाद के बैनर के तले उसके साथ मिलकर चलने से ही उसे आजादी मिल पाएगी।

क्लारा ने महिला मजदूरों की सुरक्षा के लिए विशेष ध्यान रखने की बात का भी विरोध किया। पर पैरिस सम्मेलन में भाग लेने वालों के बहुमत से यह धारणा बिलकुल भिन्न थी। इसीलिए क्लारा के भाषण पर तो खूब तालियां बजीं, और सम्मेलन

में इन दोनों निर्णयों को सहमति भी मिली। उनमें से एक था, "महिलाओं के शरीर को विशेष रूप से नुकसान पहुंचाने वाले औद्योगिक विभागों में महिलाओं को लेना नहीं चाहिए, और दूसरा प्रस्ताव था कि महिलाओं को रात की शीफ्टों में नहीं लगाना चाहिए" उसी समय नीचे दिए गए प्रस्ताव को अनुमोदन देकर क्लारा द्वारा दी गई एक मुख्य सलाह को भी लागू किया गया।

"यह कांग्रेस आगे यह घोषणा करता है कि महिलाओं को समान अधिकार दिए जाने की प्रस्तावना के आधार पर उन्हें अपने साथ काम करने दिया जाए और विंग के आधार पर किसी तरह का भेदभाव न रखते हुए समान काम के लिए समान वेतन की मांग करने की जिम्मेदारी मजदूर पुरुषों पर है।"

इस मुद्दे पर कांग्रेस द्वारा जेट्किन की राय का समर्थन करना एक कदम आगे था। जब जर्मन प्रतिनिधियों का महिला आंदोलन का आयोग बना तो वह एक और कदम आगे बढ़ा। इस कमेटी का काम था महिलाओं में पार्टी और ट्रेड यूनियन के आंदोलनों की योजना बनकर उनका मार्गदर्शन करना। इसमें सात औरतें थीं। वह कमेटी बर्लिन में थी, इसलिए उसका नाम पड़ा, 'बेर्लिन आंदोलन कमिशन (आयोग)', आगे चलकर वह समजावादी महिला आंदोलन का प्रबंधक बना।

मार्च 1890 में बिस्मार्क को गद्दी से उतार दिया गया था। समाजवाद विरोध ी कानून अक्तुबर तक ही लागू था, उसका पुनरूद्धार करने के लिए रीचस्टैग (जर्मनी का संसद) राजी नहीं था। अन्य प्रवासी सोशल डेमोक्रेटों के साथ क्लारा को भी जर्मनी वापस लौटने की अनुमति मिल गई। तपेदिक बीमारी से ठीक हो गई फिर से वह स्टटगार्ट मे रहने लगीं। सोशल डेमोक्रेटों की किताबों और पत्रिकाओं के प्रकाशन का वह मुख्य केंद्र रहा। वे जे.एच.डब्लयू. डियेट्ज सोशलिस्ट प्रकाशन संस्था में काम करती थीं 1891 में उन्होंने डियेट्ज की अनेक रचनाओं का अनुवाद करके दिया था। उनमे एडवर्ड नल्लामी की लिखी हुई पुस्तक, "पीछे मुड़कर देखना," का अनुवाद काफी प्रसिद्ध हुआ। उस साल के अंत में इसी कंपनी ने सोशल डेमोक्रेटों की पत्रिका,"मजदूर औरत" के प्रकाशन शुरू किया। फिर उस पत्रिका का नाम बदलकर "समानता" रख दिया और क्लारा जेट्किन को उसकी संपादक नियुक्त किया। लगभग 25 साल उन्हेंने उस पत्रिका का संपादन किया।

20 जनवरी 1892 को "समानता" का पहला अंक प्रकाशित हुआ। संपादक के रूप में क्लारा ने उस पत्रिका का परिचय यूं दिया,

*"हजारों सालों से सामाजिक दृष्टि से औरत की दयनीय स्थिति के अंतिम कारण को 'मर्दो के द्वारा बनाए गए कानून में न ढूंढ़कर, वित्तीय परिस्थितियों में ढूंढना*

*होगा। इसी बात को मानते हुए **'समानता'** शुरू की जा रही है।"*

पत्रिका के शुरूआती दिनों में जेट्किन ने न सिर्फ पत्रिका के संचालन की पूरी जिम्मेदारी संभाली, बल्कि उसमें छपने वाले अधिकतर लेखों को भी खुद ही लिखती थीं। दूसरों की रचनाओं में भूल-सुधार भी वे खुद करती थीं। उन्होंने सोशल डेमोक्रटिक पार्टी से और पार्टी के वामपंथी राजनैतिक सिद्धांतों से पत्रिका को जोड़ने का प्रयास किया। संगठित मजदूर औरतों को अपनी संवेदनाओं को प्रकट करने एवं आदान-प्रदान करने का मंच के रूप में उसे विकसित किया। जिन कारखानों में महिला कामकार अधिक संख्या में थीं, वहां की हालात पर लिखने के लिए ज्यादा पन्नें छोड़ती थीं। जर्मनी में या अन्य देशों में मजदूर औरतों के क्रिया-कलापों के बारे में हड़तालों के बारे में खास तौर से प्रकाशित करने के अलावा, 'समानता' उनका समर्थन भी करती थी। इसके अलावा, उस पत्रिका में कारखाने की महिला निरीक्षकों की जरूरत पर जोर देकर लिखा जाता था। संसद व विधानसभाओं में कारखानों में महिला निरीक्षकों की नियुक्ति बिल लागू करने के लिए इस पत्रिका ने सोशल डेमोक्रेटों पर दबाव डाला। 'समानता' ने घरेलू काम नौकरानियों की समस्याओं पर भी विशेष ध्यान दिया। यह काम ज्यादातर औरतें ही करती थी। सेल्स क्लर्को के काम की परिस्थितियों के बारे में भी 'समानता' में छापती थीं। इनमें भी औरतें ही अधिक थीं।

जर्मन उद्योगों में काम करने वाली औरतों के काम करने के हालात बहुत ही खराब रहते थे। कई औरतों को हफ्ते में छ : दिन (11 से 14) घंटे काम करना पड़ता था। वे केवल काली रोटी, आलू और पत्ता गोभी से पेट भरती थीं। कभी दोपहर के खाने में मांस मिलता भी था तो सिर्फ नाम के वास्ते होता था। खाने की कमी के कारण शरीर में खून की कमी से शरीर का सही विकास न हो पाना, रोग प्रतिरोधक क्षमता की कमी आदि की शिकायत रहती थी।

जेट्किन इस बात पर जोर दिया था कि 'समानता' का लक्ष्य नए सदस्यों को आकृषित करना नहीं है, बल्कि 'विकसित महिला कामरेडों की जरूरतों को पूरा करना है।' इस पत्रिका ने "एक ही लक्ष्य को पाने का प्रयास किया था। वह था - लड़ाई में अगली पंक्ति में खड़ी रहने वाली महिलाओं को सोशल डेमोक्रेसी में पक्की नींव पर खड़ा करना।" हर दो हफ्ते बाद समाजवादी नारीवादियों और कई बुर्जुआ नारीवादियों, समाजवादी लक्ष्यों और बुर्जुआ लक्ष्यों के बीच के अंतर पर प्रकाश डालते हुए, औरतों के विकास के लिए अपनाई जाने वाली कार्यनीति और समाजवादी सिद्धांत के बीच संबंध जोड़ते हुए 'समानता' उस लक्ष्य के लिए प्रयास करती थी।

गंभीर अस्वस्थता के बावजूद अक्तूबर 1908 तक जेट्किन ने अकेले ही

'समानता' तथा उसके परिशिष्टों का संपादन किया। 1903 में पत्रिका की 11 हजार प्रतियां बिकीं। 1906 में 67 हजार प्रतियां और 1910 में 85 हजार और 1914 तक 1 लाख 25 हजार प्रतियां बिकने लगीं। अक्टूबर 1908 में 'समानता' को 12 पन्नों से 24 पन्नों का कर दिया गया था। उसके बाद हर अंक में बच्चों के लिए, गृहिणियों और मांताओं के लिए परिशिष्ट जोड़ने लगे। उसी समय, बच्चों के परिशिष्ट की जिम्मेदारी जेट्किन ने केट डंचर को सौंपी और उन्हें सहायक संपादक भी बना दिया।

समाजवादी पत्रिकाओं के लिए लिखना और 'समानता' का संपादन करने के साथ साथ क्लारा तेजी से फैलने वाले ट्रेड यूनियन आंदोलन में पूरी तरह से लीन हो गई। बुक बाइंडर ट्रेड यूनियन के मुख्य नेताओं में वे भी एक थी। ब्रश, क्लोव (दस्ताने) बनाने वाले कारखानों के मजदूरों, लकड़ी कामगारों की यूनियनों के अलवा दक्षिण जर्मन के श्रमिक संगठनों में भी वे सक्रिय रूप से भाग लेती थी। दर्जी और कढ़ाई कामगार संगठन के क्रिया-कलापों में अधिक सक्रिय थी। उस यूनियन की वे कई सालों तक अंतर्राष्ट्रीय सचिव रहीं।

ट्रेड यूनियनो में काम करते समय क्लारा पर्चे लिखकर बांटती थीं, बंद और हड़तालों के वक्त मजदूरों के लिए चंदा वसूल करना, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन महासम्मेलनों के आयोजनों में सहयोग करती थीं। अंग्रेजी, फ्रांसीसी, इतालवी भाषाओं में उन्हें जो ज्ञान प्राप्त था, उसका उपयोग करके अनेक जर्मन ट्रेड यूनियनों के साथ अंतर्राष्ट्रीय संबंध जोड़े।

जर्मन मजदूरों के बारे में तो वे जानती ही थीं। इसके अलावा विदेशों में भी ट्रेड यूनियनों के काम करने के तरीकों को वह जानती थीं। इसी वजह से पूरे जर्मनी में, स्थानीय पार्टी बैठकों, महिला संगठनों व श्रमिक संगठनों के आयोजनों में पार्टी प्रवक्ता के तौर पर भाषण देने के लिए उन्हें निमंत्रण मिलते थे। कुछ ही सालों में उन्होंने लगभग 300 भाषण दिए। उद्योगों में महिलाओं की भूमिका के बारे में, कितनी बदतर परिस्थितियों में उन्हें काम करना पड़ रहा है उसके बारे में, मजदूर वर्ग की औरतों को संगठित करने की आवश्यकता के बारे में और इसी तरह के अनेक विषयों पर वे भाषण देती थीं। सैकड़ों, हजारों लोग उनका भाषण सुनने आते थे।

बहुत जल्द जेट्किन अपने भाषणों में मजदूर महिलाओं की सुरक्षा पर जोर देने लगी थी। वास्तव में उन्होंने उस कानून का विरोध किया। पर एंगेल्स की बातों का उनपर गहरा प्रभाव रहा। एंगेल्स ने कहा था कि प्रकृति ने औरत को मां बनने की जिम्मेदारी सौंपी है इसलिए समाज में उनका स्थान अपेक्षकृत कमजोर और असुरक्षित है। इसीलिए मजदूर पुरुषों से ज्याद महिलाओं को कानूनी तौर पर हिफाजत बहुत

जरूरी है। 1884 में प्रकाशित एंगेल्स की किताब,"परिवार, निजि संपत्ति राज्य की उत्पति" पढ़ने के बाद जेटकिन का विश्लेषण मार्क्सवाद के और भी करीब आया। महिलाओं के उत्पीड़िन का कारण पुरुषों का शारीरिक अधिपत्य समझती थी। अपने इन विचारों को बुर्जुआ नारीवादी विश्लेषण के रूप में चिन्हित किया। एंगेल्स का अनुसरण करते हुए अब क्लारा उस शोषण की जड़ को निजी संपत्ति में देखने लगी।

1901 में 'समानता' में उन्होंने लिखा था, ***"मजदूर वर्ग की औरतों की संपूर्ण मुक्ति केवल समाजवादी समाज में ही संभव है। इस वक्त समाज में जो आर्थिक और गरीबों, महिलाओं और पुरुषों, शारीरिक श्रम और मानसिक श्रम के बीच का सामाजिक अंतर भी लुप्त होगा ...."*** पुंजीवादी व्यवस्था का विनाश करने से पुंजी और श्रम के बीच का विशेष अंतर विरोध मिट तो जाएगी, साथ ही महिलाओं के काम और पुरुषों के काम के बीच का अंतर विरोध भी मिट जाएगा

3 अगस्त, 1898 की 'समानता' पत्रिका के अंक में ***''राजनैतिक अधिकारों की आकांक्षा करना किसी भी महिला आंदोलन के लिए छुटी होना चाहिए,"*** इस विचार को उन्होंने प्रकट किया। क्लारा ने यह कहा कि औरतों को मतदान देने का अधिकार मिलने के बावजूद व्यक्तिगत संपत्ति का मामला तो वैसा का वैसा ही रहेगा। इसलिए वह सभी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकेगा फिर भी वर्गो के बीच की लड़ाइ में वह एक जरूरी हथियार हैं। महिलाओं के सहयोग के बिना मजदूर वर्ग अपनी आर्थिक एवं राजनैतिक लड़ाइयों में विजय प्राप्त नहीं कर सकेगा। "मतदान देने का अधिकार मुख्य रूप से एक सामाजिक अधिकार है," इस बात पर उन्होंने जोर दिया।

सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी आधिपत्य के द्वारा आयोजित कार्यक्रम में 1890 से 1912 तक मतदान की मांग को पेश करना, राज्यों और राष्ट्र भर में रहने वाले विध ान सभाओं में महिलाओं के लिए वोट का मांगने के लिए आवाज उठाया जाना, खासकर क्लारा के प्रयासों के कारण ही संभव हुआ,यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। समाजवादीयों के आगे महिलाओं के वोट के अधिकार की समस्या को पेश करने में जेट्किन की खास भूमिका रही। 'समानता' मे इस विषय पर उन्होंने 30 आलेख लिखे। 1902-10 के बीचे आयोजित छः समाजवादी सम्मेलनों में, मतदान देने का अधिकार के सुधारों को लेकर किए गए सभी अभियानों में, महिलाओं को वोट डालने के हक के लिए सभी समाजवादियों को संघर्षरत होने का बुलावा देकर, उन निर्णयों को सहमति दिलाने के लिए क्लारा ने बड़े प्रयास किए।

1907 में स्टटगार्ट में अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी कांग्रेस के साथ साथ अंतर्राष्ट्रीय

समाजवादी महिला- महासभाओं का भी आयोजन किया गया था। विभिन्न देशों में रहने वाली समाजवादी महिलाओं के बीच निर्माणात्मक संबंधों को मजबूत बनाने के लिए 15 देशों से आए 59 महिलाओं के साथ अन्तरराष्ट्रीय महिला ब्यूरो बनाया गया था। उसकी सचिव के रूप में क्लारा जेट्किन को चुना गया था। अन्तरराष्ट्रीय संबंधों से जुड़ी महिलाओं की आधिकारिक पत्रिका के रूप में 'समानता' को घोषित किया गया था।

तीन साल बाद दूसरी बार अन्तरराष्ट्रीय महिला-महासभा को कोपेनहैगन में आयोजित किया गया था। फिर एक बार जेट्किन को ही उस सभा की सचिव चुन लिया गया। 'समानता' उसकी अधिकारिक पत्रिका के रूप में इस बार भी घोषित की गई।

1910 मे कोपेनहैगन में औरतों के वोट के हक पर की गई बहस 'सीमित रूप से कुछ महिलाओं को वोट का हक' नामक समस्या को केन्द्र बनाकर चली। इस तरह कुछ औरतों को वोट का हक दिलाने मात्र से समस्या नहीं सुलझेगी यह तो साफ था, लेकिन भविष्य में सभी महिलाओं को वोट का हक दिलाने की दिशा में यह पहला कदम होगा एक सुधारवादी कार्य होगा, इस बात को दृष्टि में रखते हुए ब्रिटेन और बेल्जियम की औरतों ने उसका समर्थन किया। पर जेट्किन ने डटकर उसका विरोध किया। उन्होंने कहा कि यह सभी महिलाओं के प्रति अन्याय है और समूचे मजदूर वर्ग के लिए हानिकारक है। फिर एक बार उन्हीं की राय को अनुमोदन प्राप्त हुआ स्टटगार्ट में औरतों के वोट-हक के जिस निर्णय को अनुमोदन मिला था, उसका कोपेनहैगन की महासभा में पुनरूद्घाटन हुआ था। कोपेनहैगन में ही क्लारा ने यह प्रस्ताव पेश किया था कि साल में एक दिन को अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में घोषित करना चाहिए। हर साल 8 मार्च को सभी देशों में अन्तरराष्ट्रीय महिलाा दिवस के रूप में मनाए जाने का और मुख्य रूप से औरतों के वोट देने के हक की मांग को केन्द्र बनाकर उस दिवस को मनाए जाने का निर्णय ले लिया गया था।

न्यूयार्क शहर में सिलाई का काम करने वाली मजदूर औरतों के नेतृत्व में (इनमें से ज्यादातर समाजवादी थीं) 8, मार्च 1908 इतवार के दिन एक जुलूस निकाला जाना था। वोट-हक की मांग करने , और मजबूत सिलाई मजदूरों के ट्रेड यूनियन के निर्माण का प्रस्ताव रखने के लिए मैनहटन के निचले पूर्वी भाग के बीचों बीच स्थित रट्जर चौराहे पर सैकड़ों लोगों की भीड़ जमा हो गई।

1908 का यह जुलूस इतना सफल रहा कि वह विदेशों में रहनेवाली समाजवादी महिलाओं की ध्यान को आकृष्ट कर सकी। इसके बारे में जब क्लारा

जेट्किन को मालूम हुआ तो अमरीकी मजदूर औरतों के प्रदर्शन का वह दिन, यानी 8, मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने का, सभी देशों में महिलों के लिए समान हकों की मांग करने के लिए होने वाले संघर्ष के लिए समर्पित करने का निर्णय कोपेनहैगन में पेश किया था। प्रतिनिधियों में से ज्यादातर लोग उनके प्रस्ताव को मानने के लिए तैयार थे। 1911 में पहली बार अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया था।

मई, 1904 के बाद क्लारा लोगों को शिक्षा प्रदान करने की बात पर अधिक ध्यान देने लगी। 1890 के दशक में कई बार शिक्षा की समस्या पर उन्होंने भाषण दिए थे, पर जब से प्रशियाई पब्लिक स्कूलों में धर्म के प्रभाव को सुब्यवस्थित बनाने के लिए एक कानून लागू किया गया था, तब से वह इस समस्या पर अधिक ध्यान देने लगी। जुलाई 1906 में बनाए गए इस कानून के तहत आगे से कैथोलिक बच्चें को कैथोलिक अध्यापकों और प्रोटेस्टेट बच्चों को प्रोटेस्टेंट अध्यापकों द्वारा पढ़ाए जाने की बात कही गई थी। शिक्षा से जुड़ी सभी संस्थाओं में धर्म के प्रभाव के निर्मूलन की मांग करते हुए वे उस कानून के खिलाफ लड़ी इसी तरह सबके लिए एक ही तरह की, नि:शुल्क शिक्षा-ब्यवस्था को किंडर गार्टन से लेकर कॉलेज तक स्थापित करने की उन्होंने सलाह भी दी थी। शिक्षा के द्वारा श्रम के प्रति आदर तथा मूल्य का विकास के महत्व का भी उन्होंने रेखांकित किया था। अंत में, "स्त्री-पुरुषों के बीच के संबंधों में अत्याधिक उमंग पैदा करने वाले या कृत्रिम रूम से उत्तेजित करने वाले, सभी अस्वस्थ विषयों का अतिक्रमण करने को," पब्लिक स्कूलों की जानकारी प्राप्त किए बिना बड़े न बनें और (अवास्तविक) स्त्रियों की दयनीय स्थिति के बारे में उनके दिमागों में गलतफहमियां न भरी जाय इस बात के लिए सहशिक्षा उपयोगी सिद्ध होगी।

1908 तक अधिकारिक तौर पर औरतों को पार्टी में शामिल कराना निषिद्ध था पर पार्टी के जीवन में समाजवादी महिलाओं को भाग लेने की सुविधा कराने के लिए 1890 में सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी ने एक मार्ग बनाया। कानूनी बधनों के कारण या पुरुषों की गलतफहमियों की वजह से अगर उनका चुनाव सार्वजनिक सभाओं में संभव नहीं है तो कम से कम महिलाओं के लिए विशेष रूप से आयोजित सभाओं में पार्टी के सम्मेलनों में भाग लेने के लिए महिलाओं को चुना जा सकता है, ऐसा एक नियम क्लारा ने बनाय। 1892 से सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी में जबतक वे सदस्य रहीं, हर साल क्लारा जेट्किन पार्टी के सम्मेलनों के लिए प्रतिनिधि चुनी गई थी। सभी सम्मेलनों में चुस्ती से भाग लेती रहीं 1895 तक जर्मन सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के मुख्य नेताओं में उनका भी स्थान व्यवस्थित हो गया। उसी साल जर्मन सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी की शासन मंडली में उन्हें चुन लिया गया था। इस पार्टी के

कार्यकारिणी समिति में चुनी गई वे पहली औरते थीं। सच पूछा जाए तो जर्मनी में स्त्री-पुरुष, दोनों से युक्त एक संस्थ में इस तरह का कार्य भार संभालने वाली वे पहली महिला थीं। बेबेल, मेहरिंग, चार और पार्टी के नेताओं के साथ मिलकर शिक्षा से जुड़े अनेक क्रिया कलापों को सलाह देते हुए, उनका मार्गदर्शन करते हुए, उनकी निगरानी करने के लिए 1906 में इस कमेटी को बनाया। सब तरह से समाजवादी महिलाओं की मुख्य प्रतिनिधि के रूप में क्लारा जेट्किन काम करती रहते थी। पर सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी की नेतृत्व से जेट्किन के संबंध कभी ठीक नहीं रहने थे। 1908 के बाद वे संबंध और भी खराब हो गए। उस साल पूरे जर्मनी में महिलाओं के लिए सभा- समावेश, संघ आदि बनाने का अधिकार मिल गया। 1908 से पहले चुनावों में हिस्सा लेने के लिए कानून औरतों को रोकता था। इसीलिए जर्मनी की औरतों के लिए यह बहुत बड़ी जीत थी। 1908 के बाद सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी की नेतृत्व ने पार्टी में समाजवादी महिलाओं की स्वायतता (ऑटानमी)को खत्म करके उनकी सभी संस्थाओं को पुरुषों के आधिपत्य वाली एक बड़ी संस्था में मिला लिए। समाजवादी महिलाओं से संबंधित सारे निर्णय पार्टी कार्यकारिणी कमेटी ही लेने लगी। एक महिला सदस्य इस कमेटी में सभी स्त्रियों की प्रतिनिधि के रूप में रहेगी।

यह निर्णय क्लारा जेट्किन के लिए एक कदम पीछे चलने जैसा था। वे ऐसी पहली हस्ती थीं। जो पार्टी में महिलाओं के लिए अलग संस्था की मांग करती थीं। उन्हें विश्वास था कि ऐसा होने पर, अल्पसंख्यक समाजवादी महिलाएं अपना प्रभाव पूरी तरह दिखा पाएंगी और इससे उनके प्रायोजनों को वहां पर प्रातिनिध्य मिल सकेगा। साथ ही समाजवादी महिला आंदोलन अपेन रैडिकल (क्रांतिकारी) प्रवृत्ति को जारी रखने में और निर्णयात्मक राजनैतिक परिस्थितियों में एक क्रान्तिकारी लांक की तरह भी अन्धी तरह काम करने को स्वायत्तता सुविधा प्रदान करेगी। जर्मन सोशल डेमोक्रेटों में से जो पुरुष थे उनके मन में औरतों घर बनाकर बैठी के विरूद्ध की लड़ाई में क्लारा ने कभी अपनी भावनाओं को नहीं छिपाया। जब भी पार्टी में महिलाओं के प्रति भेदभाव के बारे में औरतें शिकायता करतीं, पार्टी के पुरुष नेता मजाक का सहारा लेते थे, और यह देखकर क्लारा का पारा चढ़ जाता था (मजाक करने वालों की इच्छा के मुताबिक उन मजाकों पर लोग हंसते थे)। क्लारा की नजर में समाजवादी महिलाओं की इस शिकायत का 'अपहास करना' 'क्रातिकारी सिद्धांतों को न मानना ही' था।

अंत में क्लारा हार गई। कार्यकारी समिति मे बहुत समय से क्रांतिकारी नेता के स्थान पर सुस्थिर रहने वाली क्लारा को न चुनकर, र बात में समझौते के लिए तैयार रहने वाली लूइस जियेज को चुन लेने पर पाठक ध्यान दें। जियेज एक

होलस्टेइल बुनकर की बेटी थी। 1896 में हैंबर्ग में हुई जहाज के खलासियों की हड़ताल में बड़ी प्रतिभाशाली वक्ता और आंदोलनकारी के रूप में और संगठनकर्ता के रूप में वे आगे आई। पार्टी में उन्हें ऊपर पहुंचाने के लिए क्लारा ने विशेष ध्यान देकर प्रयास किया था। 1908 में वे महिला ब्यूरो और पार्टी कार्यकारी मंडली के लिए चुनी गई थी। तुरंत जियाज पार्टी के उद्देश्यों में समाजवादी महिलाओं के आंदोलन को पहचान दिलाने के लिए लड़ने लगी। उन्होंने कहा कि पार्टी की अधिकार व्यवस्था में समाजवादी महिला संघों को भी आत्मसात कर लेना चाहिए और नेतृत्व के स्तर पर दोनों गुटों को एक होना चाहिए।

जर्मन सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी में क्लारा का बढ़ते प्रभाव का विरोध करने की वजह से क्लारा और सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के बीचे तकरार होने लगी। ये सुधारवादी उसी एडवर्ड बर्नस्टीन के अनुयायी थे, जिन्होंनं यह विवाद उठाया था कि पुंजीवादी पद्धति मार्क्स के दिखए मार्ग पर न चलकर दूसरी दिशा में विकसित हो रही है।

क्लारा जेट्किन को भी कार्ल लीबनेख्ट (विलियम लीबनेख्ट का बेटा जिसमें उग्रवादी (मिलिटेंट) भावनाएं थीं) और रोजा लग्जेंबर्ग (युवा पोलिश क्रांतिकारी जिनके साथ क्लारा की लंबे अर्से तक गहरी दोस्ती रही) की तरह यह नितांत सुध ारवाद जैसा ही लगा। अपने दिमाग की पूरी ताकत से वे इसके खिलाफ लड़ी। बेर्नस्टीन की और उनके अनुयायियों की आलोचना करते हुए उन्होंने बड़े -बड़े भाषण दिए। कई लेख लिखे। पार्टी की पाठशाला में अध्यापकों के रूप में सुधारवाहदयों को नौकरी न दिलाकर क्रांतिकारी भावनाओं से भरे लोगों की नियूक्ति कराने शिक्षा से जुड़ी केंद्रीय कमेटी की सदस्या होने के नाते, क्लारा ने मुख्य भूमिका निभाई। जेट्किन के हठ के कारण ही रोजा लग्जेंबर्ग पार्टी की पाठशाला में पढ़ाने लगीं। जेट्किन ने इस बात पर ज्यादा जोर दिया कि पाठ्यक्रम में मार्क्सवादी सिद्धांतो पर अधिक बल दिया जाए।

समाजवाद के मुख्य तरीकों में, चुनावों में जीत का ही काफी सहारा लेने की बात पर जो जोर दिया जाता था, उस मानसिकता का विरोध क्लारा ने बड़ी तीव्रता से की। सार्वजनिक हड़ताल के प्रति, 1905 में हुई, रूस की क्रांति के प्रति जेट्किन के उत्साह को सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी ने गलत समझा। पार्टी की कार्यकारी समिति ने इसे नजरअंदाज कर दिया था, पर 1905-1906 में क्लारा ने पूरे जर्मनी में सार्वजनिक हड़ताल के लिए, 1905 की रूसी क्रांति के समर्थन के लिए बढ़ चढ़कर प्रचार किया। क्रांतिकारी पार्टी की मुख्य चाल के रूप में, "संसदीय पद्धति की सीमा को" जेट्किन ने रेखांकित किया। संसद के बाहर, राजनैतिक जीवन से जुड़ी महान शक्तियों पर और ध्यान देने की, बड़ी तादाद मेम लोग जिन कार्यों मे भाग लेते है, उन्हें आयोजित करने

की उन्होंने मांग की।

साम्राज्यवाद का और युद्ध वाद का, सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी जिस सुधारवादी दृष्टिकोण से विश्लेषण करती है, उसकी कड़ी आलोचना करने वालों में क्लारा भी थीं। सेना, साम्राज्यवाद, प्रवासी संपत्ति आदि चीजें विरोध करने लायक बुराइयां नहीं है, वे एसे वरदान है. जिनमें निहित थोड़ी बहुत बुराइयों को सुधारा जा सकता है– यह सुधारवादियों का कहना था। क्लारा ने उनकी इस धारणा का विरोध किया। उन्होंने गुस्ताव नोस्की की उस घोषणा का तिरस्कार किया जिसमें कहा गया था कि जर्मन सैनिक ताकत की रक्षा करने में और उसे बढ़ाने में बुर्जुवा पार्टियों का जितना प्रयोजन है, सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी का भी उतना ही प्रयोजन है। उन्होंने जोर देकर कहा कि मजदूर वर्ग को भी मातृभूमि के प्रति प्रेम होता है, पर यह शासक वर्ग के प्रेम जैसा नहीं है। "वह .... स्तरों का भेद नहीं है। स्वभाव में ही ये दोनों प्रेम अलग अलग है।" "मातृभूमि को पहले अंदर के शत्रु से, बुर्जुबा वर्ग के अधिकार से छुड़ाना पड़ेगा, जीतना पड़ेगा। तभी वह सबकी मातृभूमि बनेगी," इस तरह के नजरिए से श्रमिक वर्ग की देशभक्ति शुरू होती है।

सितंबर 1911 में जेना में आयोजित सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के सम्मेलन में जर्मन साम्राज्यवाद का समर्थन करने वाले समाजवादियों के खिलाफ रोजा लग्जमबर्ग और क्लारा जेट्किन ने लड़ाई की। बहुत ही स्पष्ट शब्दों से साम्राज्यावादी शत्रुओं का खंडन करते हुए, मास्कों संकट के संबंध में जर्मनी के रवैये की विरोष रूप से आलोचना न करते हुए एक प्रस्ताव को पार्टी के नेताओं ने पेश किया।

प्रस्ताव को और भी स्पष्ट और भी साम्राज्यवाद विरोधी तथा युद्ध विरोधी बनाने के लिए क्लारा और रोजा के नेतृत्व में साम्राज्यवाद के विरोधियों ने कई सुध ार जोड़े। पर सुधार गया यह प्रस्ताव हार गया ं जेना सम्मेलन इस घोषणा के साथ खत्म हुआ कि युद्ध की ओर ले जाने वाले किसी भी कार्य का हम विरोध नहीं करेंगे, जर्मन विदेशी विधान के कुछ हिस्सों से हम सहमत हैं।

1914 अगस्त में पहला बिश्वयुद्ध शुरू होने तक क्लारा ने युद्धवाद के और साम्राज्यवादी युद्ध के रिवलाफ बहुत भारी प्रचार किया। युद्ध के शुरू होने के बाद भी अपनी इस भूमिका को उन्होंन जारी रखा। रीचस्टैग मे रहने वाले जर्मन सोशल डेमोक्रेटों ने 4 अगस्त 1914 को युद्ध–ऋण के लिए जब अपने मत डाले, तब तुरंत खूले आम पार्टी के रवैये का खण्डन करनेवालों में क्लारा का स्थान पहला था।

सेनसार के लोगों के साथ पत्रिका का मतभेद बढ़ने का सबूत इस बात से मिल गया कि जेट्किन के लेखों में काली स्याही से पोटी जगहों की संख्या बढ़ गयी।

संपादक मंडली के समर्थन से जेट्किन जानबूझकर उन जगहों को वैसे ही छोड़ देती थी। तबतक 'समानता' ने अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर युद्ध का विरोध करने वाली स्त्रियों के पत्रिका के रूप में पहचान बना लिया था।

7 नवम्बर 1914 के अंक में, "सभी देशों की समाजवादी महिलाओं के लिए", नामक क्लारा का निवेदन प्रकाशित हुआ था। " जब पुरुष एक-दूसरे को मार रहे होते हैं तब जीवन को बचाने के लिए हम औरतों को ही लड़ना पड़ेगा। जब पुरुष चुप हो जाते हैं तो हमारे अपने आदर्शों को चिल्ला-चिल्लाकर बताने का कर्तव्य हमारा बन जाता है", क्लारा ने समझाया। इस निवेदन को पार्टी का अनुमोदन नहीं मिला। पर क्लारा नहीं घबराई। समाजवादी महिलाओं की अन्तरराष्ट्रीय संस्था की अध्यक्ष के रूप में स्विटजरलैंड में बेर्न नामक शहर में उन्होंने एक सभा का आयोजन किया इसे भी पार्टी की स्वीकृति नहीं मिली। यह "गैर कानूनी" महिला सभा 15 मार्च 1915 को हुई । ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, इटली, पोलेंड, रूस, हॉलैण्ड, स्वीटजरलैंड से 28 प्रतिनिधि उपस्थित हुए। युद्ध के प्रति समाजवाद के विरोध को संगठित रूप से पहली बार व्यक्त करने वाली इस सभा में युद्ध के खिलाफ क्लारा द्वारा लिखे गये प्रस्ताव को स्वीकार किया। क्लारा द्वारा लिखी गयी घोषणापत्र को भी उसने प्रकाशित किया।

श्रमिक मलिाओं के लिए बनायी गयी इस घोषणापत्र के शुरूआत इन सवालों से होती है-"आपके पति कहां है। अपके बेटे कहां है? पिछले आठ महिनों से वे युद्ध क्षेत्र में हैं। उन्हें जबरदस्ती उनके घरों से और काम के स्थान से पकड़कर ले जाया गया था। लाखों लोग समाधियों में आराम कर रहे हैं। और कुछ लाख लोग हाथ, पैर, आंखें खोकर, टुटी खोपड़ियां लेकर, छूत की बीमारियों का शिकार होकर, सेना के अस्पतालों मे पड़े सड़ रहे हैं।" उसके बाद " युद्ध से किसे लाभ पहुंच रहा है?" यह सवाल पूछा जाता है। इसका जवाब भी योजना खुद देते हुए कहती है "हर देश में बहुत कम लोगों को लाभ पहुंचता है। बंदूक, तोप, कवच, तारपेडो, नाव आदि बनाने वाले लाभ पाते हैं। बन्दरगाहों के मालिक, सैनिकों के जरूरत की सामान पहुंचाने वालों को फायदा होता है। इन फायदों के लिए वे लोगों में नफरत की भावना को जगा देते हैं। इस तरह युद्ध की मदद करते हैं। इस युद्ध से सामन्यतः पूंजीपतियों का फायदा होता है।"

श्रमिको को इस युद्ध से कोई लाभ नहीं मिलता, बल्कि इस युद्ध के कारण वे उन चिजों को खो बैठते हैं जिनसे उन्हें बहुत प्यार होता है।

यह घोषणापत्र, "युद्ध का खण्डन किजिए। समाजवाद की ओर कदम बढ़ाईए। नारे के साथ समाप्त हुई।

इस घोषणापत्र को स्वीटजरलैंड में प्रकाशित करके जर्मनी में रहस्मय ढंग से खूब बांटा गया था।

बेर्न के महिला बैठक की समाप्ति के कुछ ही दिन बाद उस बैठक में लोकर्पित घोषणापत्र की बांटने के अपराध में क्लारा जेट्कीन को हिरासत में ले लिया गया था। कार्ल्स रूहे में उन्हें चार महीने तक कैद में रखा गया था।

मई 1917 में कार्यकारी समिति ने क्लारा को 'सामनता' की सम्पादक के पद से हटा दिया। उसका अधिकारिक स्पष्टीकरण यूँ दिया गया था..... कि जेट्किन के सम्पादन में जो आलेख छापे जाते हैं, वे "अधिकतर मजदूर औरतों की समझ से परे होते हैं।" पर असली कारण यह था कि 'बहुसंख्यक समाजवादी था सोशलिस्ट युद्ध का पक्ष लेने की बात की वह निरंतर आलोचना करती रही थीं।

19 जून, 1917 के 'लीपजेगर वोल्कजेटुंग' में प्रकाशित "सभी देशों की समाजवादी महिलाओं के लिए' नामक लेख मे क्लारा ने इस बात का जवाब दिया, "पत्रिका का कट्टरता से सूत्रों का पालन करना ही मुझे हटाने का असली कारण है। बहुसंख्यक समाजवादियों की युद्ध नीति को चुपचाप स्वीकार कर लेना, " बेशर्मी से कायरता दिखाना ही होगा," क्लारा ने जवाब में यह लिखा।

क्लारा जेट्किन ने बड़े उत्साह के साथ रूस की बोल्शेविक क्रान्ति को गले लगाया। पिछड़े हुए देश में हुई। क्रान्ति होने के कारण सामाजवादियों ने उसे असली क्रान्ति नहीं माना, पर क्लारा ने उसकी इस बात का तिरस्कार किया।

1 जनवरी 1916 को कार्ल लीबनेख्ट के 'कानून के दफतर' में जर्मनी की चारों ओर से आए प्रतिनिधि 'ग्रुप इन्टर्नेशनल' (अन्तरराष्ट्रीय समूह) की स्थापना के लिए रहस्यपूर्ण सभा में इकट्ठे हुए। यही आगे जाकर नवम्बर 1918 मे स्पार्टकस लीग में परिवर्तित हुई। दिसम्बर 1918 मे स्थापित जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी (के पी डी) का यह केन्द्र बना। क्लारा को.पी.डी. की संस्थापक सदस्य थी। 1917 में वे सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी से अलग होकर स्वतंत्र डेमोक्रेटिक पार्टी यू.एस.डी.पी.) के साथ मिली। इसे जनवरी 1917 में कुछ युद्ध विरोधी समाजवादियों ने स्थापित किया था। ये स्वतंत्र समाजवादी एस.डी.पी. और स्पार्टकस लीग के बीच डोलते रहे। युद्ध सामाप्त होने के बाद अंत मे उनके नेता एस.पी.डी. के साथ मिल गए। लेकिन कार्यकर्ताओं में से कईयों को क्लारा अपने साथ जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी में ले गई। के.पी. डी. की तारीफ करते हुए क्लारा जेट्किन ने कहा कि, ' अपने असली रूप में, यानी, एक क्रान्तिकारी श्रमिक वर्ग की पार्टी के रूप में, लड़ने वाली पार्टी के रूप में अपने आपको प्रदर्शित करने का साहस इस राजनीतिक संस्था में है।'

15 जनवरी 1919 को नरम दलीय समाजवादी नेताओं से भरी विकास निरोध क 'फ्रेइकार्प्स' संस्था ने कार्ल लीबनेख्ट की और रोजा लग्जेंबर्ग की निर्मम हत्या कर डाली। उसके बाद, और फ्रांज मेहरिंग की मौत के बाद, जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी में युद्ध के पहले से नेता बनकर रहने वाली सिर्फ क्लारा बच रह गई। के. पी. डी. में उन्हें गौरवपूर्ण पद दिया गया। 1919 से 1923 तक, फिर 1927 मे वे उसकी केन्द्रीय कमिटी की सदस्य रही। वेइमर रिपब्लिक पहले सत्र से आखरी सत्र तक रीचस्टैग (जर्मनी का संसद) में के.पी.डी. की प्रतिनिधि बनकर वे उपस्थित रहीं।

श्रमिक वर्ग की महिलाएं फुर्ती से मन लगाकर काम करेगी, तभी श्रमिक वर्ग के अधिपत्य को प्राप्त करना और उसे बनाए रखना संभव हो सकेग।" मार्च 1919 में तीसरे कम्युनिस्ट अन्तरराष्ट्रीय (इसे कोमिंटर्न भी कहते हैं) व्यवस्थापक सम्मेलन में स्वीकृति प्राप्त प्रस्ताव इन वाक्यों से अंत होता है। क्लारा ने इस दृष्टिकोण की प्रशंसा की। के.पी.डी. महिला पत्रिका 'डी. क्मूनिस्टेन' के पहले अंक में क्लारा ने नई अन्तरराष्ट्रीय का तुरंत समर्थन किया था। 1919 की गर्मियों में तीसरी अन्तरराष्ट्रीय पत्रिका, 'कम्युनिस्ट इंटरनेशनल' में उनके आलेख छपने लगे।

1920 की बसंत में कम्युनिस्ट इंटर्नेशनल के कार्यकारी वर्ग ने, पश्चिमी यूरोप के सचिवालय मंडली में चुस्ती से काम करने वाली क्लारा जेट्कीन की कम्युनिस्ट स्त्रियों के अन्तरराष्ट्रीय सचिव के रूप में नियुक्त किया। तब उनकी उम्र 62 साल थी। 13 साल पहले उन्हें अन्तरराष्ट्रीय समाजवादी महिला आंदोलन के लिए सचिव चुना गया था।

अन्तरराष्ट्रीय सचिव के रूप में उन्हें जो काम करने पड़ते थे और अक्सर बीमार रहते हुए विशेष डॉक्टरी मदद की जरूरत के कारण क्लारा अधिकतर सोवियत संघ (रूस) में ही रहती थीं। वे अक्सर लेनिन से मिलती रहती थीं। लेनिन से दो बार लंबी बातचीत करने के बाद लिखी गई पुस्तिका में उन्होंने लिखा था कि स्त्रियों से जुड़ी अनेक समस्याओं के सम्बंध में लेनिन के विचार सुनकर वे बहुत प्रभावित हुई थीं।

सोवियत संघ में रहते समय क्लारा अक्सर बीमार और कमजोर रहती थीं। बहुत समय तक बिस्तर से नहीं उठ पाती थीं। पर अन्तरराष्ट्रीय श्रमिक आन्दोलन के लिए और जाति-भेद भाव के विरूद्ध युद्ध के खिलाफ यथासंभव सहायता करने में उनकी बीमारी अड़चन नहीं बन सकी। सोवियत संघ में एम.ओ.पी.आर. नाम से जानी जानेवाली अन्तरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट (लाल) सहकारी संस्था की वे अध्यक्ष थी। विभिन्न देशों में स्त्री-पुरुषों पर हो रहे दमनकांड के विरूद्ध अन्तरराष्ट्रीय अभियानों को

आयोजित करने में यह संस्था मदद पहुंचाती थी।

इनमें से सबसे बड़ा उदाहरण है, स्कॉट्स बरो के लड़कों को मौत की सजा से छुड़ाने के लिए किया गया अभियान 25 मार्च 1931 में नौ अश्वेत नस्ल के लड़के अलाबामा राज्य से टेन्नेसी राज्य में काम ढूंढने के लिए जाते हुए दो श्वेत जाति की लड़कियों पर अत्याचार किया, यह आरोप लगाया गया था। उनमें से एक लड़का बारह साल का था। उनकी सुनवाई अलबामा के स्कॉटबरों में हुई। जूरी के सभी सदस्य गोरे थे। ज्यूरी ने लड़कों को दोषी ठहराया। नौ में से आठ को मौत की सजा दी गई। अन्तरराष्ट्रीय श्रमिक सुरक्षा संस्था और कम्युनिस्ट पार्टी की देखरेख में इन्हें छुड़ाने का अभियान शुरू हुआ। अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर उसका खूब बढ़ावा हुआ। अन्तरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट (लाल) सहकारी संस्था की अध्यक्ष के रूप में अप्रैल 1932 में क्लारा ने एक अपील पेश किया। " स्कॉट्सबरों के युवकों की बचा लीजिए।" के शीर्षक के अन्तर्गत उन्होंने लिखा, "यह मन में अभी मानवता के भाव रखने वालों के लिए है। आठों युवकों को मौत की सजा और इलेक्ट्रिक चुयर से बचाएंगे। उनकी एक-मात्र गल्ती काले होकर पैदा होना ही है।"

स्कॉट्सबरो के युवक मृत्युदंड से छूट गए। पर उनपर किया गया आरोप झूठा था, यह जानते हुए भी, उन्हें कई साल जेल में बिताने पड़े उनमें से आखरी युवक को 1950 मे छोड़ दिया गया था।

आंख नहीं दिखाई देती थी, बीमार थी, नाजी मार डालने की धमकियां देते रहते थे, पर इन सबकी परवाह न करते हुए क्लारा जेट्किन 1932 में बेर्लिन वापस आ गई। वे आखरी बार लोगों के सामने आई। रीचस्टैग के उद्घाटन के समय हिटलर तथा नाजी, अध्यक्ष हेंडेनर्ग की मदद से रीचस्टैग को अपने अधीन करने की कोशिश कर रहे थे। हर नए रीचस्टैग को उसके सबसे वरिष्ठ सदस्यों के द्वारा शुरू करने की परंपरा के अनुसार 30 अगस्त 1932 की पहली बैठक की शुरूआत करने का काम क्लारा को संभालना था। तबतक नाजियों के द्वारा मचाया हुआ शिभत्स देश को निगलता जा रहा था। वे अज्ञातवस से बाहर निकली और सबको आश्चर्य चकित करते हुए सभा में प्रकट हुई। एक घंटे तक चले अपने भाषण में उन्होंने फासिज्म का स्पष्ट शब्दों में खंडन किया था,। "फासिज्म को भागने के लिए शोषित जनता की रक्षा के लिए, उनके रोजमर्रे के जीवन को आगे बढ़ाने के लिए श्रमिकों से युक्त एक संघठन में अब भी लैंगिक दासता को भोगते हुए, इस तरह अत्यंत भयानक वर्ग दासता का अनुभव करने वाली लाखों स्त्रियों भी होंगी।" मातृभूमि के बारे में दिए गए अपने अंतिम भाषण को समाप्त करते हुए क्लारा ने कहा " फिलहाल शारीरिक रूप से मैं

कमजोर जरूर हूं, पर अध्यक्ष के ओहदे पर रहते हुए सोवियत जर्मनी में पहले सोवियत सम्मेलन को शुरू करने का सौभाग्य मुझे मिलेगा, यही आशा करती हूं पर उनकी आशा सच नहीं हो पाई। जनवरी 1933 अधिकार को अपने हाथ में ले लिया। क्लारा शोवियत संघ में वापस चली गई 22 जून 1933 को वहां क्लारा का देहांत हो गया।

पर क्लारा मरी नहीं। हम सबके अन्दर जिन्दा हैं। हमारा हर एक कदम, हमारी हर एक बात, हमारी हर एक लड़ाई, क्लारा जैसे क्रान्तिकारियों की विरासत ही है। वे जहां-रूके वहीं से हमारी शुरूआत होती है।

इतना ही नहीं, " आगे से युद्ध नहीं चाहिए" कहकर क्लारा ने हमें जो संदेश दिया उसपर अमल करने का कर्तव्य हमार ही है। मौत के कगार पर खड़ा साम्राज्यवाद फिर से दुनिया के लोगों पर युद्ध को मढ़ने का प्रयत्न कर रहा है। इसिलिए-

साम्राज्यवादी युद्ध के खिलाफ एकजुट होंगे।

शोषण और उत्पीड़न से रहित समसमाज की स्थापना करेंगे।

क्लारा जैसी शहीदों के लिए हम इसी तरह सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकेंगे।

क्लारा.....

तुम्हारा नाम मुक्ति के लिए लड़ने वाली स्त्रियों में नए उत्साह को जगाएगा।

तुम्हारा नाम सुधारवादियों के दिलों में दहशत भर देगा।

शोषित लोगों की मुक्ति का मतलब स्त्री-मुक्ति ही है, इस बात को तुमने ढोल बजाकर बताया। जीवन साथी में जो पितृसत्तत्मक विचारधारा है, उसे दूर कैसे किया जाए यह तुमने आचरण करके दिखाया, क्लारा.....हमारी ध्रुवतारा .....

"अत्यधिक श्रमिक वर्ग के जनबाहुल्य को समेटने के प्रयत्न में, पुरुष मजदूरों पर जितना ध्यान दिया जात है

उतना ही स्त्री मजदूरों पर नहीं दिया जाएगा।

तो मजदूर आन्दोलन अवश्य आत्महत्या कर लेगा"

तुम्हारे ये वाक्य हमारे कानों में गूंज रहे हैं

तम्हारा महोज्वल क्रान्तिकारी जीवन हमारे मार्ग को प्रकाश से भर रहा है

इन्हीं का सहारा लेकर हम अपने लक्ष्य की तरफ दृढ़ता से कदम बढ़ाएंगे

तुम्हारे आशय को पूरा करेंगे।

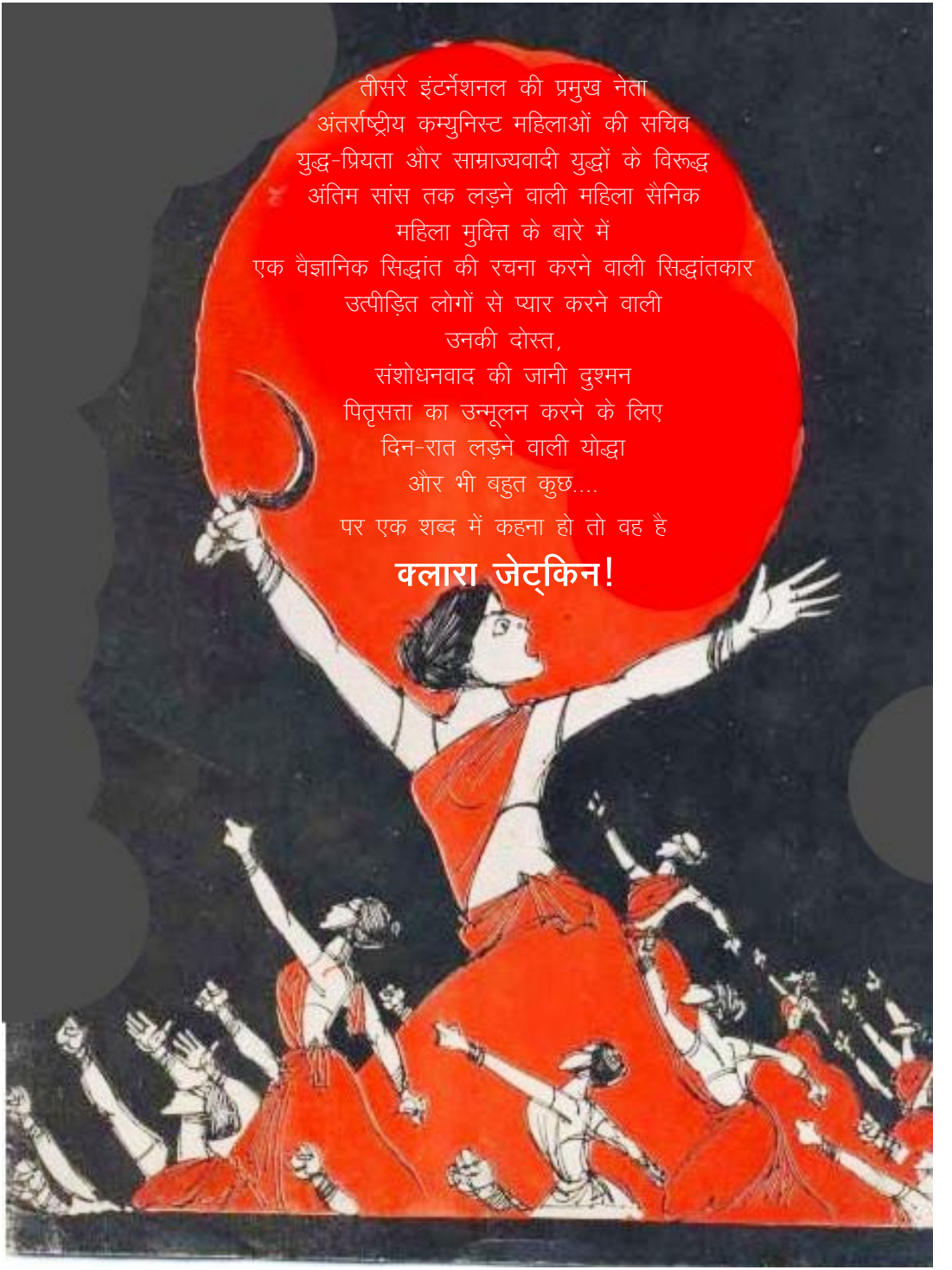
तीसरे इंटर्नेशनल की प्रमुख नेता
अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट महिलाओं की सचिव
युद्ध-प्रियता और साम्राज्यवादी युद्धों के विरूद्ध
अंतिम सांस तक लड़ने वाली महिला सैनिक
महिला मुक्ति के बारे में
एक वैज्ञानिक सिद्धांत की रचना करने वाली सिद्धांतकार
उत्पीड़ित लोगों से प्यार करने वाली
उनकी दोस्त,
संशोधनवाद की जानी दुश्मन
पितृसत्ता का उन्मूलन करने के लिए
दिन-रात लड़ने वाली योद्धा
और भी बहुत कुछ....
पर एक शब्द में कहना हो तो वह है
क्लारा जेट्किन!